ROYAL THRIVE
(A Peer Reviewed & Refereed Journal)
Volume – 1 Issue – 1 January – 2024 ISSN : 3048-524X

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकाररता और समकालीन स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता

डॉ अवधेश कु मार
(असस. प्रोफे सर) रॉयल एजुके शनल इंस्टिट्यूट ग़ाससयाबाद

प्रस्तावना :-

डॉ. भीमराव अम्बेडकर, "भारत रत्न", भारतीय संववधान के जनक हैं। उन्ोोनं ोंे समाज में मौजूद कई सामावजक बुराइयों, ववशेषकर छुआछू त और जावतगत मतभेदों के वलए संघषष वकया है। डॉ. अम्बेडकर ने पत्रकाररता के माध्यम से लोगों को वशववत करना और जागरूकता बढाना शुरू वकया। इस संबंध में, उन्ोोनं ोंे अपना पहला समाचार पत्र तब शुरू वकया जब वे के वल 29 वषष के थे और कोल्हापुर के महाराजा की मदद से 31 जनवरी, 1920 को इसका नाम मूकनायक रखा। यह के वल तीन वषों के वलए खुला था, जो अप्रैल 1923 में समाप्त हुआ। बाद में, उन्ोोनं ोंे तीन और समाचार पत्रों की स्थापना की: बवहष्कृ त भारत (1927-1929), समता (वजसे बाद में जनता कहा गया) (1928-56), और प्रबुद्ध भारत (बाद में इसका नाम बदलकर जनता कर वदया गया) (1956). पहले, पत्रकाररता के वल ऑफ़लाइन और वप्रंट मीवडया प्रारूपों में उपलब्ध थी, लेवकन वतषमान पररदृश्य में, यह देखा गया है वक ऑनलाइन पत्रकाररता पुराने मीवडया (पारंपररक मीवडया) और बढते ऑनलाइन ब्लॉग और वेब पोटषल समुदाय के बीच साझा वकया जाने वाला एक बढता हुआ वोंे त्र है। हाल के वदनों में, ऑनलाइन पत्रकाररता सबसे तेजी से बढने वाला वोंे त्र बन गया है, क् ोोवं क पहले यह डॉ. अम्बेडकर के समय में वप्रंट पत्रकाररता थी। आज इलेक्ट्रॉवनक युग ने पत्रकाररता का स्वरूप बदल वदया है। अब कोई भी व्यस्टि यह पत्रकाररता कर सकता है और अपने पत्र वडवजटल प्लेटफॉमष पर प्रकावशत कर सकता है। इससे लागत भी कम होती है और प्रबंधन आसान हो जाता है। वतषमान समय में पत्रकाररता का वोंे त्र पहले की तुलना में व्यापक हो गया है। ऐसा देखा जाता है वक अब समाचारों और पवत्रकाओं ने समाज के बहुत से वोंे त्रों को कवर कर वलया है, लेवकन डॉ. अम्बेडकर का ध्यान भारतीय समाज से सामावजक बुराई के उन्मूलन पर था। भारत रत्न, डॉ. अम्बेडकर हमेशा समाज के प्रवत समवपषत थे और भारतीय लोगों की बेहतर वृि्द्ध और ववकास के वलए संघषष करते रहे। डॉ. अम्बेडकर ने कई समसामवयक मुद्ोोंे पर कई रूपों में वलखा। भीमराव अम्बेडकर के अनुसार पत्रकाररता का उद्ोंे श्य लोगों का ज्ञानवधषन और वैज्ञावनक स्वभाव का ववकास होना चावहए। **कससन शब्द:-** डॉ. अम्बेडकर, पत्रकाररता, ऑनलाइन पत्रकाररता, स्वतंत्र पत्रकाररता

पररचय:-

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सामावजक गुलामी के ि खलाफ संघषष छेड़कर भारत को एक आधुवनक राष्ट्र बनाने की नीवं रखने के वलए महान प्रयास वकये। डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक महान ववचारक, ववपुल लेखक, ववा, दाशषवनक, ववद्वान, न्यायववद्, अथषशास्त्री, अछू तों और मवहलाओं के अवधकारों के वलए प्रचारक और "भारतीय संववधान के मुख्य वास्तुकार के साथ-साथ एक उच्च गुणवत्ता वाले पत्रकार" थे। भारतीय संववधान के वनमाषता डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भारतीय समाज में व्याप्त जावतगत मतभेदों और छुआछू त के ि खलाफ लगातार लड़ाई लड़ी। अंबेडकर ने अपने पूरे जीवन में दवलतों, वंवचतों, शोवषतों, श्रवमकों और मवहलाओं को समाज में समान दजाष, सम्मान और अवधकार वदलाने के वलए अनवगनत प्रयास वकए। उन्ोोनं ोंे अछू तोद्धार कायों, समाज सुधार और नारी मुस्टि पत्रकाररता में अच्छे और साथषक प्रयोग वकये। डॉ. अम्बेडकर ने कई वषों तक अमेररका में रहकर अध्ययन वकया। वह मीवडया उद्योग से पररवचत थे। चूू ो वक वह सचेत था
भारतीय जनसंचार माध्यम के वल उच्च जावत की वहंदू ववचारधारा को प्रवतवबंवबत करेंगे, उन्ोोनं ोंे उत्पीवड़त लोगों के वलए एक अलग समाचार पत्र चुना और इसवलए उन्ोोनं ोंे समाचार पत्र प्रकावशत करना शुरू कर वदया।' [रत्नमाला, 2012]। **डॉ. अम्बेडकर द्वारा पत्रकाररता:-** 1920 में, बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अपना पहला समाचार पत्र तब शुरू वकया जब वह के वल 29 वषष के थे और कोल्हापुर के महाराजा की मदद से 31 जनवरी, 1920 को इसका नाम मूकनायक रखा। अप्रैल 1923 में बंद होने से पहले यह तीन साल तक चला। " बाद में, उन्ोोनं ोंे तीन और समाचार पत्र स्थावपत वकए - बवहष्कृ त भारत (1927-1929), समता, वजसे बाद में जनता (1928-56) और प्रबुद्ध भारत नाम वदया गया। (1956)। बवहष्कृ त भारत और जनता दोनों पाववक थे, जबवक प्रबुद्ध भारत साप्तावहक था। "वह पहले दो समाचार पत्रों, मूकनायक और बवहष्कृ त भारत के संपादकीय प्रबंधन में सीधे शावमल थे। 1930 के बाद से, उन्ोोनं ोंे यह कायष अपने सबसे महत्वपूणष सहयोवगयों, जैसे देवराव नाइक, बी.आर. को सौपं वदया। काद्रेकर, जी.एन. सहस्त्रबुद्धे, आर.डी. भंडारे, और बी.सी. कांबले. अम्बेडकर ने अपने समाचार पत्रों के वलए जो नाम चुने,

उनसे स्पष्ट्ःतः उनके समाचार पत्रों के उद्ोे श्य की पुवष्ट्ः हुई। मूकनायक (गूंगों का नेता), बवहष्कृ त भारत (बवहष्कृ त भारत), और जनता (जनता) सीधे तौर पर उत्पीवड़त लोगों से संबंवधत थे। डॉ.
बी.आर. अम्बेडकर का मानना था वक यवद दवलतों को जागृत और सवश बनाना है, तो उन्ोे ों स्वयं के प्रकाशन की आवश्यकता है। इसी उद्ोे श्य को ध्यान में रखते हुए उन्ोेनं ोे 31 जनवरी 1920 को मराठी पाववक मूकनायक का प्रकाशन शुरू वकया। "मूकनायक" का अथष है बेजुबानों का नायक। इसके प्रकाशन के पीछे के तकष को समझाते हुए, अंबेडकर ने मूकनायक के उद्घाटन अंक के संपादकीय में वलखा, "वतषमान में हमारे लोगों के साथ जो अन्याय वकया जा रहा है और भववष्य में वकया जाएगा, उसके ि‍खलाफ उपाय सुझाने के वलए अखबार से बेहतर कोई स्रोत नहीं है।" , और भववष्य में हमारी प्रगवत के तरीकों और साधनों पर भी चचाष करेंगे।" उसी संपादकीय में उन्ोेनं ोे वलखा, "वहंदू समाज एक मीनार की तरह है वजसमें वबना सीढी या प्रवेश द्वार के कई मंवजलें हैं।" जो आदमी वनचले तबके में पैदा हुआ है, वह ऊपरी तबके में प्रवेश नहीं कर सकता, चाहे वह वकतना भी योग्य क् ोोों न हो, और जो आदमी ऊं चे तबके में पैदा हुआ है, उसे वनचले तबके में नहीं वनकाला जा सकता, चाहे वह वकतना ही अयोग्य क् ोोों न हो। अंतर-भोजन और अंतर-जातीय वववाहों के अभाव से उत्पन्न अलगाव ने स्पृश्य और अस्पृश्यों की भावनाओं को इतना बढावा वदया है वक ये स्पृश्य और अस्पृश्य जावतयोंू ो , हालांवक वहंदू समाज का एक वहस्सा हैं, वास्तव में अलग-अलग दुवनया में रह रही हैं। "' [www.forwardpress.in] जब मूकनायक की शुरुआत हुई, तब अंबेडकर वसडनीहम कॉलेज, बॉम्बे में प्रोफेसर थे और सरकारी नौकरी में थे। इस वजह से, वह संपादक नहीं बन सकते थे, इसवलए उन्ोेनं ोे एक वशववत युवा पांडुरंग नंदराम भटकर का नाम रखा। दवलत समाज से, संपादक के रूप में। अंबेडकर ने हमेशा न के वल मीवडया में बल्कि जीवन के सभी वोेत्रों में दवलतों के वलए उवचत प्रवतवनवधत्व की वकालत की। मूकनायक के तीसरे अंक में "यह स्वशासन नहीं बल्कि हम पर शासन है" शीषषक वाले संपादकीय में वदनांक 28 फरवरी, 1920 को अम्बेडकर ने स्पष्ट्ः रूप से कहा वक यवद स्वराज साकार होता है, तो दवलतों को उसमें वहस्सेदारी वमलनी चावहए। अम्बेडकर ने स्वराज पर ववचार करना जारी रखा। 27 माचष, 1920 के मूकनायक के पांचवें अंक में संपादकीय का शीषषक था, "हमारा उत्थान" स्वराज को, इसके साक्ष्य और इसकी ववववध।"

डॉ. अम्बेडकर और स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता:- स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता पुराने मीवडया (पारंपररक मीवडया) और बढते ऑनलाइन ब्लॉग, वेब पोटषल समुदाय के बीच साझा वकया जाने वाला एक बढता हुआ वोेत्र है। आज समवपषत ब्लॉगसष और पत्रकारों के कई बढते समूह डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसी स्वतंत्र आवाज़ प्रदान कर रहे हैं। यवद हम वपछले वषों की प्रगवत पर द्दवष्ट्ः डालें तो यह वसद्ध होता है वक जो व्यापाररक पत्र थे, उनका बहुत ववकास हो चुका है और कु छ ही प्रवतद्वंद्वी पत्र वनकल सके हैं। लेवकन 90 के दशक के बाद पत्रकाररता के प्रवतमान बदल गये। यह सूचना क् ोोों वत और पत्रकाररता के वोेत्र में कं प्यूटर के आगमन से संभव हुआ। टेक्नोलॉजी और मीवडया का वमश्रण यानी वेब-पत्रकाररता। आज स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता मीवडया का सबसे तेजी से बढने वाला वप बन गया है
वेब पत्रकाररता की मदद. यह गवतशील एवं त्वररत सूचना माध्यम है। इसकी सबसे बड़ी ववशेषता पाठकों और दशषकों से संवाद है। आज कम्प्प्यूटर क् ोोों वत ने पत्रकाररता का स्वरूप बदल वदया है। आज कोई भी व्यक्ति यह पत्रकाररता कर सकता है और अपना पत्र वडवजटल प्लेटफॉमष पर प्रकावशत कर सकता है। इससे लागत भी कम होती है और प्रबंधन में आसानी भी होती है।
दो वषों में बवहष्कृ त भारत के 22 संस्करण प्रकावशत हुए। वंवचतों के अवधकारों के वलए पत्रकाररता के इवतहास में यह एक ऐवतहावसक और उत्कृ ष्ट्ः कृ वत थी।
'इसके अलावा, 3 जून 1927 के बवहष्कृ त भारत के पांचवें अंक में, अम्बेडकर ने 'आजकल के प्रश्न' कॉलम में एवडनबगष में भारतीय छात्रों के ि‍खलाफ भेदभाव पर कड़ी प्रवतवक्र्या स्टव्य की। उन्ोेनं ोे कहा, "जो लोग पढने के वलए इंग्लैंड जाते हैं वे अमीरों के बेटे हैं। उनके वलए पढाई महज खेल है और उनके प्रवत अत्यवधक सहानुभूवत रखने का कोई कारण नहीं है. जावतगत भेदभाव से दूर रहने वालों द्वारा की जाने वाली जावतगत भेदभाव की वशकायतों की वचंता वकसे होगी? वे स्वयं जावतगत भेदभाव में इतने डू बे हुए हैं वक अछू तों के वलए वकसी भी छुआछू त की संस्था में कोई जगह नहीं है। अम्बेडकर ने बवहष्कृ त भारत में चार भागों में "महार और उनका देश" शीषषक से एक संपादकीय वलखा। 23 वदसंबर 1927 के बवहष्कृ त भारत के संपादकीय का शीषषक है "अछू तों की प्रगवत का आधार"। संवोेप में, बाबासाहेब की पत्रकाररता अछू तों के ववकास के संघषष के वलए समवपषत थी।' वकसी पत्र को उसकी ववषयवस्तु के साथ जीववत रखने में ववज्ञापन का भी प्रभावी योगदान होता है। डॉ. अम्बेडकर अपने समाचार पत्रों की इस ववज्ञापन समस्या से बहुत प्रभाववत थे, लेवकन आज ऐसी कोई ि‍स्थवत नहीं है, आज ऑनलाइन प्लेटफॉमष पर ववज्ञापन वमलना आसान है और वडवजटल प्लेटफॉमष पर पत्र प्रकावशत करने की कम लागत इस बात का संके त है वक व्यक्ति अपने ववचार स्टव्य कर सकता है और स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता की मदद से बौि‍द्धक संवाद वकया जा सकता है।

ROYAL THRIVE
(A Peer Reviewed & Refereed Journal)
Volume – 1 Issue – 1 January – 2024 ISSN : 3048-524X

'डॉ। अम्बेडकर ने मीवडया में उत्पीवड़त लोगों के कम प्रवतवनवधत्व और भेदभाव के कारणों को खोजा। उन्ोोनं ोंे सूवचत वकया वक "अछू तों के पास कोई प्रेस नहीं है। कांग्रेस प्रेस ने उनके प्रवत अपना दरवाजा बंद कर वलया है और उन्ोंे ोंं जरा सा भी प्रचार न देने पर आमादा है। स्पष्् कारणों से उनका अपना प्रेस नहीं हो सकता। ववज्ञापन राजस्व के वबना कोई भी अखबार जीववत नहीं रह सकता। [डॉ। अम्बेडकर का पुस्तक संग्रह: खंड 17, 1993]स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता में, एक समस्या जो आज भी मौजूद है वह है भाषा की समस्या। चूंू ो वक, ऑनलाइन पत्रकाररता में अंग्रेजी का बोलबाला है, इसवलए वोंे त्रीय भाषा के वलए कोई समान स्थान नहीं है। डॉ. अम्बेडकर ने पत्रकाररता का अपना सारा कायष वोंे त्रीय भाषा में वकया तावक उस समय के लोग उनकी रचनाओं की आवाज सुन सकें । लेवकन आज वोंे त्रीय भाषाओं के वलए वेब पत्रकाररता या स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता पर वटके रहना कवठन होता जा रहा है। इस बात से इनकार नहीं वकया जा सकता वक स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता के पाठक वगष अवभजात्य वगष है और अन्य आबादी ऑनलाइन पत्रकाररता/वेब पत्रकाररता तक पहुंच नहीं बना पाती है। ऐसे में वतषमान में चल रहे सभी वेब पोटषल, वेब साइट और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉमष के सामने भाषा का चुनाव एक चुनौती है।

डॉ. अम्बेडकर ने पत्रकाररता में नैवतक मूल्ोंोंं को सवाषवधक महत्व वदया है। वहीं, स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता में मूल्ोंोंं की सबसे ज्यादा हंसी हुई है। हालांू ो वक, सभी मंचों पर ऐसा नहीं है, लेवकन यह अभी भी एक समस्या है वजसके वलए कु छ वचंताओं और वचंतन की आवश्यकता है। डॉ. अम्बेडकर की पत्रकाररता और वतषमान स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता को देखने से पता चलता है वक डॉ. अम्बेडकर की पत्रकाररता की एक पररवध थी, उसका प्रभाव

वोंे त्र वनववत था, जबवक आज स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता का प्रभाव और पहुंच व्यापक है।

यहां हमने वतषमान में चल रही स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता को सारणीबद्ध वकया है –

पोटटल/वेबसाइ्	संस्थापक/संपादक का नाम	प्रारंभ	दैननक/मानसक/त्रैमानसक
दनलत दस्तक	अशोक दास	27 मई 2012	मानसक
नेशनल दस्तक	अंकु शभगत	2014	डेली
फॉरवडट प्रेस	इवान कोि्का	जून 2009	मानसक
शूद्र	सुनमत चौहान	2020	दैननक
मूकनायक मीनडया	प्रो. रामलखन मीना	2020	-----

ये स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता नये युग की पत्रकाररता के कु छ उदाहरण मात्र हैं। इस प्रकार की पत्रकाररता को ताकत डॉ. अम्बेडकर की पत्रकाररता से वमल रही है जो एक सदी पहले ही हो चुकी थी। डॉ. अम्बेडकर का प्रत्येक संपादकीय ववचारोत्तेजक होता था। 'बवहष्कृ त भारत के पहले अंक में

'पुन:वो हररओम' शीषषक से उन्ोोनं ोंे जो संपादकीय वलखा, वह पत्रकाररता के वोंे त्र में काम करने वालों के वलए बहुत महत्वपूणष है।'

'मूकनायक, बवहष्कृ त भारत और जनता में अंबेडकर की तीखी संपादकीय वटप्पवणयों को भारतीय सामावजक व्यवस्था के साथ उनके टकराव के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। अम्बेडकर एक तटस्थ पयषवेवोक बनकर संतुष्् नहीं थे। वह एक हस्टस्तेपकताष थे जो यथाि्स्थवत को बदलना चाहते थे।' 'जनता' साप्तावहक 1928 के पूरे वषष जारी रहा। हालांू ो वक, बीच-बीच में कई कारणों से इसके कु छ संस्करण छू ट जाते थे। 4 फरवरी 1956 को 'जनता' वअर का नाम बदल वदया गया और यह "प्रबुद्ध भारत" के नाम से वनकलने लगा। 4 फ़रवरी, 1956 से 6 वदसम्बर, 1956 तक उन्ोोनं ोंे "प्रबुद्ध भारत" को वनयवमत रूप से वनकलते देखा, उसके कु छ अंकों में लगातार वलखा।

'अंबेडकर समझते थे वक मीवडया में भेदभाव का एक अन्य स्रोत उच्च जावत का वचषस्व था। उन्ोोनं ोंे कहा वक एसोवसएटेड प्रेस ऑफ इंवडया के कमषचारी, जो भारत में मुख्य समाचार ववतरण एजेंसी है, पूरी तरह से मद्रास ब्राह्मणों से आते हैं - वास्तव में पूरी प्रेस उनके हाथों में है और, जो जाने-माने कारणों से पूरी तरह से समथषक हैं। कांग्रेस और कांग्रेस ववरोधी वकसी भी खबर को प्रचार नहीं वमलने देगी। ये अछू तों के वनयंत्रण से परे कारण हैं।' [डॉ. अम्बेडकर का पुस्तक संग्रह: खंड 2, 1993]

'इसके अलावा डॉ. अम्बेडकर मीवडया के स्वावमत्व और मीवडया की सामावजक संरचना के बारे में भी जागरूक थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अवधकांश समाचार पत्र कांग्रेवसयों और सवणष वहंदुओं के स्वावमत्व में थे। तो जावहर तौर पर वे ऐसे वकसी भी ववचार के ख़िलाफ थे जो वहंदू धमष और कांग्रेस पाटी का ववरोध करता हो। वजन अखबारों ने गांधीजी की धनवदयायात्रा को सत्याग्रह के रूप में प्रस्तुत वकया था, उन्होंने अखबारों ने अंबेडकर के महाड संघषष को सत्याग्रह मानने से इनकार कर वदया। इसके अलावा, उन्होंने उस संघषष को ववश्वासघात कहकर उसका उपहास उड़ाया। चूंवक अपने समाचारों और ववचारों को प्रकावशत करने के वलए कांग्रेस समथषक जनसंचार माध्यमों पर वनभषर रहना संभव नहीं था, इसवलए अंबेडकर ने समाचार पत्र चलाने का वनणषय वलया।' [रत्नमाला, 2012] मूकनायक से प्रबुद्ध भारत तक डॉ. अम्बेडकर की पत्रकाररता की यात्रा उनके सामावजक, आवथषक और राजनीवतक जीवन का एक असाधारण संघषष है। दवलत आंदोलन के इवतहास में इस यात्रा का भी अनोखा और असाधारण महत्व है। वस्तुतः ये पवत्रकाए़ उस काल की आवश्यकता थी।ं इन पवत्रकाओं ने समाज को एक नई दृवष्ट देने का प्रयास वकया। बाबा साहेब अपने माध्यम सेलेखन ने संपूणष वहंदू समाज और देश के कोने-कोने में क्रांवत की वचंगारी फैला दी। इन सभी पवत्रकाओं में न केवल दवलत वलख रहे थे, बवल्क सवणष भी वलख रहे थे। डॉ. अम्बेडकर पत्रकाररता को सामावजक पररवतषन का एक सवश माध्यम मानते थे और आज स्वतंत्र ऑनलाइन पत्रकाररता इन सभी अम्बेडकर की पत्रकाररता से संबंवधत है। डॉ. अम्बेडकर ने पत्रकाररता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कायष वकया। डॉ. अम्बेडकर का लक्ष्य समाज में व्याप्त कई सामावजक बुराइयों को दूर करना और एक समतामूलक भारतीय समाज की स्थापना करना था। वे कई प्रकाशनों के संपादक रहे। पत्रकाररता के इवतहास में अम्बेडकर की पत्रकाररता एक मील का पत्थर है। डॉ. अम्बेडकर ने अनेक समसामवयक मुद्दों पर अनेक रूपों में वलखा। उन्होंने पत्रकाररता को सामावजक पररवतषन का माध्यम बनाया और भारतीय संववधान में वनवहत न्याय, स्वतंत्रता और समानता के लोकतांवत्रक मूल्यों को ववकवसत वकया। डॉ. अम्बेडकर का मानना था वक पत्रकाररता का उद्देश्य पाठकों को अवधक प्रबुद्ध बनाना, उनमें नई सोच पैदा करना, उनमें वैज्ञावनक दृवष्ट ववकवसत करना होना चावहए। **सन्दभभ ग्रन्थ :-**

1. जाफ़रलॉट, सी. (2009)। अस्पृश्यता और जावत व्यवस्था के ववरुद्ध डॉ. अम्बेडकर की रणनीवतयाँ। ववकंग पेपर सीरीज़, वॉल्यूम। III, नंबर 04. नई वदल्ली: भारतीय दवलत अध्ययन संस्थान।

2. कदम, के.एन. (1991)। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर और उनके आंदोलन का महत्व: एक कालक्रम। बॉम्बे: लोकवप्रय प्रकाशन।
3. कीर,धनंजय। (1954) डॉ अम्बेडकर जीवन और वमशन। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन प्राइवेट वलवमटेड, मुंबई।
4. सरकार, बी. (2013). डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का राज्य समाजवाद का वसद्धांत। इंटरनेशनल ररसचष जनषल ऑफ सोशल साइंसेज। वॉल्यूम। 2(8), 38-41.

5. ज़ेवलयट, ई. (2004).डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर और अछूत आंदोलन। नई वदल्ली: ब्लूमून बुक्स, 2004।
6. बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर का पुस्तक संग्रह: खंड 17, 1993, भारत सरकार।
7. बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर का पुस्तक संग्रह: खंड 2, 1993, भारत सरकार।
8. मानकर, ववजय। 2011. आवदवावसयों-स्वदेशी लोगों की समस्याओं और समाधान पर भाषण (वहन्दी)। ब्लू वर्लषट सीरीज. नागपुर, भारत.
9. वनमामलाई, रत्नमाला। (2012)। अम्बेडकर और मीवडया. 25 अप्रैल 2020 को https://www.researchgate.net/profile/Ratnaमाला_Vanamamalai/publication/324984350_Ambedkar_and_Media/links/5af02f5daca2727bc006603b/Ambedkar-and-Media?origin=publication_detail पर उपलब्ध है।

10. कांबले, बी.आर. 2010. मूकनायक (अंग्रेजी)। सामावजक ववकास में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर अनुसंधान संस्थान। कोल्हापुर, भारत।

वेबसाइट संदभभ -

11. http://drambedkarwritings.gov.in/content/writings-and-speeches.php

12. http://velivada.com/2018/03/28/dr-ambedkar-as-a-journalist/

13. http://socialjustice.nic.in/

14. http://ambedkarfoundation.nic.in/html/index.html

15. http://www.ambedkarpedia.com/

16. https://mea.gov.in/ambedkar.htm

17. http://drambedkarbooks.wordpress.com

18. https://www.researchgate.net/